

प्रकाशनार्थ

कोविड बाद दुनिया का स्वास्थ्य संसार बदला है। बदलते पर्यावरणीय परिवर्तन, रहन-सहन, दिनचर्या खाद्यपदार्थों के उत्पादन एवं रख-रखाव में रासायनिक पदार्थों के उपयोग इत्यादि से बदलती दुनिया में स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य सेवाओं के समक्ष अनेक नई चुनौतियाँ खड़ी हो रही हैं। इन चुनौतियों का सामना सूझ-बूझ, नए शोध, व्यवस्थित दिनचर्या एवं नित-नूतन उपचारात्मक विधियों से ही किया जा सकता है। भारत आज इन स्वास्थ्य सम्बन्धी चुनौतियों का सामना करने में समर्थ होता हुआ स्वावलम्बन की ओर तेजी से बढ़ रहा है। उक्त बातें आज महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में संचालित गुरु श्री गोरक्षनाथ इन्स्टीच्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज एवं गुरु श्री गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग के संयुक्त तत्वावधान में “स्वास्थ्य के समक्ष नई चुनौतियाँ” विषय पर आयोजित संगोष्ठी को सम्बोधित करते हुए एम्स, गोरखपुर की निदेशक डॉ. सुलेखा किशोर ने कही।

बी.आर.डी. मेडिकल कालेज के मेडिसिन विभाग के प्रोफेसर डॉ. राजकिशोर सिंह ने अनडिफरेंटिएटेड ट्रापिकल फीवर (यू.टी.एफ.) के बारे में कारण, बचाव, निदान व चिकित्सा के सम्बन्ध में विस्तृत प्रकाश डाला। उन्होंने ने बताया कि यू.टी.एफ. कई तरह की बीमारियों का एक बाकसेट है। इसमें प्रमुख रूप से स्क्रब टाइफस, डेंगू फीवर, टायफाइड, मलेरिया, लेक्टोस्पाइरोसेस, चिकनगुनिया, जीका फीवर व इन्सेफलाइटिस सम्मिलित है। इन्सेफलाइटिस के बारे में चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि उचित जांच व शोध उपलब्ध नहीं होने के कारण से इन सभी प्रकार के यू.टी.एफ. को इन्सेफलाइटिस मान लिया जाता था व समुचित चिकित्सा नहीं हो पाती थी। वर्तमान में बी.आर.डी. मेडिकल कालेज में एन.आई.बी. व आर.एम.आर.सी. की शाखा खोलने से कई सारे शोध के बाद इन्सेफलाइटिस के अधिकांश मरीज स्क्रब टाइफस के मरीज हैं एवं इस शोध के उपरान्त इन मरीजों की समुचित चिकित्सा प्रदान कर मृत्युदर में अप्रत्याशित कमी लाया जा सका है। वर्तमान में बी.आर.डी. मेडिकल कालेज के पैथालोजी विभाग, माइक्रालॉजी विभाग के उन्नयन एवं एन.आई.बी. व आर.एम.आर.सी. खुलने ने यू.टी.एफ. में सम्मिलित सभी रोगों की विश्वस्तरीय जांच हो रही है।

यू.टी.एफ. में सम्मिलित सभी बीमारियों की जांच, निदान व उचित चिकित्सा के बारे में बिन्दुवार बताते हुए डॉ. राज किशोर ने बताया कि इन बीमारियों में मृत्युदर करीब 12 प्रतिशत तक होती है। अतएव मरीज में यू.टी.एफ. ज्ञात होते ही इम्पीरिकल ट्रीटमेंट शुरू कर दिया जाता है। जांच की रिपोर्ट आते ही सम्बन्धित बीमारी की चिकित्सा भी प्रदान की जाती है इससे मृत्युदर में काफी कमी आ जाती है। यू.टी.एफ. में रेड फ्लड साइंस के बारे में बताते हुए कहा कि अगर किसी मरीज में उपस्थित है तो उनका इलाज भर्ती करके करना चाहिए। किसी मरीज में डेंगू होने की अवस्था में प्लेटलेट की आवश्यकता तभी पड़ती है जब प्लेटलेट काउन्ट बीस हजार से कम हो जाये या मरीज में क्लीनिकल ब्लीडिंग के साक्ष्य मिले। इसके लिए आसानी से उपलब्ध बी.पी. मशीन द्वारा टार्निके टेस्ट कैसे किया जाता है व रूल ऑफ 20 के बारे में बताया। अन्त में उन्होंने बताया कि अगर जांच सुविधाएँ नहीं भी उपलब्ध हैं तो भी क्लीनिकल ग्राउड पर यू.टी.एफ. में सम्मिलित सभी प्रकार के बुखार को जो कि मानसून व मानसून के तुरन्त उपरान्त समयकाल में बहुतायत में होते हैं और

पूर्वाचल हो हिला कर रख देते हैं उनकी पहचान, निदान और चिकित्सा सम्भव है। इसके हेतु ब्रिटिश मेडिकल जनरल द्वारा उपलब्ध कराया हुआ 3 पेज का फीवर पहचान पत्रक को समझाया गया व उपलब्ध कराया गया। फीवर आइडेन्टिफिकेश चार्ट बाई डी.एम.जे. डालकर कोई भी व्यक्ति इसको प्राप्त कर सकता है।

डॉ. कनिष्क कुमार, असिस्टेंट प्रोफेसर, मेडिसिन विभाग, एम्स, गोरखपुर ने एनिमिया के बारे में बताते हुए कहा कि ये सबसे ज्यादा पाई जाने वाली हेमेटलाजिकल बिमारी है। इसके मैक्रोसिटिक, नार्मोसिटिक व माइक्रोसिटिक के बारे में विस्तार से कारण, निवारण व चिकित्सा के बारे में बताया। उन्होंने आयरन डिफिसिएन्सी एनमिया और विटामिन बी-12 की कमी से होने वाले वीगैलो ब्लास्टिक एनमिया के बारे में बताया व भोजन में अंकुरित अनाज, हरी सब्जियों, अनार, संतार, मौसम्मी आदि के सेवन से इसके बचाव के बारे में भी विस्तृत रूप से बताया। सामान्य सावधानी से व खानपान को सुधार कर हम इस बिमारी से बच सकते हैं। वीगैलो ब्लास्टिक एनमिया शाकाहारियों में ज्यादा होता है व इसका खराब प्रभाव तंत्रिका तंत्र पर भी पड़ता है।

भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डॉ. जी.एन. सिंह ने कहा कि नए युग के भारत में नई तैयारियों के साथ हम आज स्वास्थ्य सेवा में दुनिया के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने को तैयार हैं। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय परिसर में स्थित आयुर्वेदिक एवं एलोपैथिक चिकित्सालय का वर्तमान स्वरूप वैश्विक प्रतिस्पर्धा में खड़े नए भारत के इसी परिकल्पना को साकार करेगा। अत्याधुनिक सुविधाओं एवं आयुर्वेद-एलोपैथ-यूनानी-होम्योपैथ -प्राकृतिक चिकित्सा की सभी विधियों के समन्वित उपयोग से एक अद्वितीय माडल खड़ा हो रहा है।

संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल बाजपेई ने कहा कि गुरु श्री गोरक्षनाथ इन्स्टीच्यूट ऑफ मेडिकल कालेज विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री योगी आदित्यनाथ जी का सपना है। यह अरोग्यधाम बनेगा। गोरखपुर में विकसित यह पूर्वी उत्तर प्रदेश के स्वास्थ्य सेवा का स्वर्णिम अध्याय बनाये। संगोष्ठी में आयुर्वेद कॉलेज के प्राधानाचार्य डॉ. पी. सुरेश, आयुर्वेद चिकित्सालय के अधीक्षक डॉ. एस.एन. सिंह, संहिताशास्त्र के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. सुमित कुमार एम., एनाटामी के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. प्रियंका चतुर्वेदी ने भी अपने-अपने विचार व्यक्त किये।

संगोष्ठी में अतिथियों का स्वागत गुरु श्री गोरक्षनाथ कालेज ऑफ नर्सिंग की प्राचार्या डॉ. डी.एस. अजीथा किया तथा आभार ज्ञापन सी.एम.एस. एवं कैंसर रोग विशेषज्ञ डॉ. सी.एम. सिन्हा ने व्यक्त किया। संगोष्ठी का संचालन नर्सिंग कॉलेज की छात्राएँ ऐश्वर्या एवं प्राची यादव ने किया। सरस्वती वन्दना एवं वन्देमातरम् नर्सिंग कॉलेज की छात्राएँ सुश्री सुहानी, शीतल, अनुकृता, मनीषा, प्रियंका, ज्योति द्वारा प्रस्तुत किया गया।

कुलसचिव

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर